RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-07
July-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]

वैश्विक आतंकवाद में झुलसता श्रीलंका और दक्षिण एशिया की सुरक्षा चिंता

राहुल कुमार

शोध छात्र, रक्षा एवं स्त्रॉतेजिक अध्ययन विभाग, हे.न.ब.गढ़वाल (केन्द्रीय) विश्वविद्यालय, श्रीनगर गढवाल, उत्तराखण्ड–246174

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 15July 2019

Keywords
आतंकवाद, जिहाद, उग्रवाद, आई.एस.आई.एस., एन.टी.जे. आदि।

***Corresponding Author**
Email:123k.rahul[at]gmail.com

ABSTRACT

भारत और श्रीलंका दो पड़ौसी राष्ट्र हैं, इनके संबंध ऐतिहासिक रहे हैं। श्रीलंका के अंदर घटने वाली हर एक घटना भारतीय राजनीति को प्रभावित करती है, और दक्षिण भारत की राजनीति का असर श्रीलंका में साफ देख जा सकता है। 21 अप्रैल 2019 को श्रीलंका में हुये सिलसिलेवार बम धमाकों ने पूरे विश्व को आश्चर्यचकित कर दिया। आतंकवादियों ने हमले का दिन ईसाइयों के पवित्र त्योहार ईस्टर संडे को चुना। घटना वाले दिन ही 35 विदेशी सैलानीयों सहित 207 लोग मारे गये और 400 से ज्यादा लोग गंभीर रूप से घायल हो गये, मृतकों का आंकड़ा चार दिन में 259 तक पहुँच गया। इन हमलों में कम से कम आठ भारतीय भी मारे गए हैं। आतंकवाद विश्व के सामने लगातार जारी है और नये–नये स्वरूप में भयावह समस्या का रूप लेता जा रहा है।कोई भी राष्ट्र इससे बचा हुआ नहीं है, सोशल मीडिया, एंक्रिप्ट किये गये संदेशों और वैब की अंधेरी दुनिया के जरिये दुष्प्रचार हो रहा है। नये रंगरूटों को भड़काकर जुल्म ढाने की साजिशें रची जा रही हैं। आज आतंकवाद ऐसी समस्या का रूप धारण कर चुका है जिससे पूरा विश्व एक तनाव की आग में झुलस रहा है। आज कोई भी राष्ट्र यह दावा नहीं कर सकता कि उसकी सुरक्षा व्यवस्था में कोई कमी नहीं है और वह आतंकवाद से पूरी तरह मुक्त है। सच्चाई यह है कि कोई नहीं जानता अगला निशाना कौन और किस रूप में होगा। हिंसा के द्वारा जनमानस में भय या आतंक पैदा करके उद्देश्यों को पूरा करना ही आतंकवाद कहलाता है। यह उद्देश्य राजनीतिक धर्मिक या आर्थिक ही नहीं सामाजिक या किसी अन्य प्रकार भी हो सकता है। विश्व में आतंकवाद के बहुत से स्वरूप हैं, लेकिन इनमें तीन ऐसे प्रकार हैं जिनसे पूरी दुनिया त्रस्त है– राजनीतिक आतंकवाद, धार्मिक कट्टरता और गैर राजीनतिक या सामाजिक आतंकवाद। श्रीलंका में एल.टी.टी.ई. समर्थकों एवं अफगानिस्तान में तालिबान संगठन की गतिविधियां राजनीतिक आतंकवाद के उदाहरण हैं। आतंकवादी हमेशा भय पैदा करने के लिये नये–नये तरीकों को आजमाते रहते हैं। जैसे भीड़ वाले स्थानों, रेलों, बसों आदि में विस्फोट करना, दुर्घटना के उद्देश्य से रेल की पटरियों को उखाड़ देना, वायुयानों का अपहरण कर लेना, निर्दोष लोगों या राजनीतिक व्यक्तियों को अगवा कर लेना, बैंक डकैती इत्यादी कुछ ऐसी आतंकवादी गतिविधियां हैं जिनसे पूरा विश्व किसी न किसी रूप में पीड़ित है।

श्रीलंका ने 30 वर्षों तक गृहयुद्व और आतंक की मार झेली है। वर्ष 2009 में प्रभाकरन की मृत्यु के बाद गृहयुद्ध की समाप्ति हुयी फिलहाल श्रीलंका अमन के रास्ते पर था। वर्ष 2009 के बाद से कोई बड़ी घटना देश के अंदर नहीं घटी थी। 21 अप्रैल को हुये हमले की जिम्मेवारी विश्व कुख्यात आतंकवादी संगठन इस्लामिक स्टेट ऑफ ईराक एण्ड सीरिया ने ली। यह भी साफ हो गया है कि इस हमले की जिम्मेदारी लेने वाले इस्लामिक स्टेट यानी आइ.एस. ने एन.टी.जे. के एक आत्मघाती दस्ते के जरिये ये भीषण हमले कराए। 2009 में लिट्टे के खात्मे के बाद श्रीलंका को पहली बार किसी बड़े आतंकी हमले का सामना करना पड़ा है। इस हमले का असर न केवल पीड़ित परिवारों, बल्कि वहां के सुरक्षा तंत्र और अर्थव्यवस्था पर भी लंबे समय तक रहने वाला है। श्रीलंका और आतंकी हमलों के अंदेशे से ग्रस्त है। वहां एन.टी.जे. के आतंकियों की धरपकड़ के बीच विस्फोटक सामग्री भी बरामद हो रही है। साफ है कि एन.टी.जे. ने अपना सघन जाल फैला लिया था।[1] लिट्टे के जाबांज, खुंखार उग्रवादी शाहखर्च और व्यभिचारी नहीं थे। लिट्टे के प्रत्येक कार्यकर्ता को यह शपथ लेनी पड़ती थी कि वह न तो सिगरेट पीयेगा, न शराब को छुएगा और न ही महिलाओं के साथ नाजायज लैंगिक संबंध रखेगा। लिट्टे के हर लड़ाकू को सादा और कठोर जीवन जीने की शपथ लेनी पड़ती थी। इस शपथ और अनुशासन के प्रभाव के कारण ही लिट्टे द्वारा मानव बम की अवधारणा सफल हो पायी। तब तक फिलीस्तीन, लेबनान, टर्की, अल्जीरिया और मिस्त्र जैसे देशों में ही ऐसे संगंठन थे। दक्षिण एशिया इससे मुक्त था, लेकिन प्रभाकरन ने इसकी शुरूआत यहां भी कर दी।[2]ग्लोबल टैरेरिज्म की धुरी समझे जाने वाले दो संगठन आई.एस.आई.एस. और अल–कायदा की कमर तोड़ी जा चुकी है, परंतु अफगनिस्तान और पाकिस्तान के अलावा दक्षिण एशिया के कुछ और राष्ट्रों में इनके द्वारा मचाई गयी तबाही के चिह्न आज भी देखे जा सकते हैं। वर्ष 2018 में संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट में बताया गया कि अलकायदा इन

RRIJM 2015, All Rights Reserved

इंडिया सबकोंटिनेंट यानि भारतीय उपमहाद्वीप में अलकायदा नामक आतंकी गुट किसी–न–किसी रूप में यहां सक्रिय है। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् की अलकायदा प्रतिबंध समिति के द्वारा सौंपी गयी विश्लेषणात्मक सहयोग एवं प्रतिबंध निगरानी दल की 22वीं रिपोर्ट में कहा गया था कि यह संगठन भारत और बांग्लादेश के दूरदराज वाले क्षेत्रों में अपने लड़ाकों को भर्ती कर रहा है। भारत खासतौर पर उसके निशाने पर है और हो सकता है कि कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के कारण वह किसी बड़ी घटना को अंजाम न दे पा रहा हो लिहाजा श्रीलंका के रूप में दक्षिण एशिया की सबसे सुरक्षित जगह पर इस कायराना हरकत को अंजाम दिया हो।[3] श्रीलंका की इस घटना को एक स्थानीय चरमपंथी संगठन नेशनल–तोहीद–जमात (N.T.J.) ने I.S.I.S. के साथ मिलकर अंजाम तक पहुँचाया है।श्रीलंकाईसेना के सूत्रों का कहना है कि हमले में जिस तरह के विस्फोटकों का इस्तेमाल हमलावरों द्वारा किया गया इससे पहले सेना या लिट्टे ने भी इस तरह के विस्फोटकों का इस्तेमाल कभी नहीं किया। हमले में बल्ब फिलामेंट का इस्तेमाल किया विस्फोटक के रूप में किया गया था।[4]

4 मई 2019 को सहारान क्षेत्र से पुलिस ने बिबिला नाम के एक संदिग्ध व्यक्ति को हिरासत में लिया, उसके पास मिले कंप्यूटर में 60 क्षेत्रीय संदिग्ध व्यक्तियों सूची मिली जिसके आधार पर उनमें से 8 लोगों को भी पुलिस हिरासत में लिया गया। जिससे ये अनुमान लगाया जा रहा है कि ये लोग आई.एस. से जुड़े हुये हैं। पुलिस सूत्रों के अनुसार बिबिला नुवरा एलिया क्षेत्र में ज्वैलरी की दुकान चला रहा था जिससे कि उस पर किसी को शक न हो।[5] आत्मघाती हमले के बाद श्रीलंका में उन्माद चरम पर पहुंच गया जिसको देखते हुये सरकार द्वारा उत्तर–पश्चिमी क्षेत्र के रासनायकापुरा, कोबीगाने, कुलियापतिया, बिंगिरिया, दुमलमासुरिया और हटीपोला में 12 मई को कर्फ्यू लगा दिया गया स्थिति की गंभीरता को देखते हुये श्रीलंकाई सरकार को अगले दिन पूरे देश में अनिश्चित समय के लियेकर्फ्यू की घोषणा करनी पड़ी।[6] नेशनल–तोहीद–जमात वर्ष 2018 में श्रीलंका के अंदर भगवान बुद्ध की प्रतिमाओं को तोड़कर चर्चा में आया था। इसका एक समूह तमिलनाडु में सक्रिय है, जिस पर ईसाई धर्म के कुछ लोगों का जबरन धर्मांतरण कराने का आरोप लगा था और अक्टूबर 2017 में इसके विरूद्ध प्राथिमिकी दर्ज करायी गयी थी। अमेरीका तथा भारत की खुफिया एजेंसीयों ने श्रीलंका को इस हमले को लेकर सतर्क भी किया था, ऐजेंसियों की चेतावनी में बड़े गिरिजाघरों के साथ–साथ भारतीय उच्चायोग पर हमले के बारे बताया गया था। यह भी संभव है कि गिरिजाघरों और होटलों पर हमले का मकसद विदेशी नागरिकों को निशाना बनाना रहा हो, ताकि यह अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में एक चर्चा का बिषय बने और अस्तित्व खोते आतंकवादी संगठनों को फिर से चर्चा का एक मंच मिल जाये। बिना किसी बहाने के किसी भी सुरक्षित जगह पर आतंकी कार्यवाही को अंजाम देने की यह नई आतंकी रणनीति पूरे विश्व के लिये एक चिंता का बिषय है। इससे निपटने के लिये चलाये जाने वाले अभियानों की सफलता उसके वैश्विक रूप पर निर्भर करेगी।[7]

9 नवम्बर 2001 को के अलकायदा के आतंकवादीयों ने 3 हवाई जहाजों का अपहरण करके अमेरिका के वर्ल्ड ट्रेड सेंटर से टकरा दिया था। ये घटना इतिहास में ऐसी घटना थी जिसने पूरे विश्व के लिये आतंक की परिभाषा ही बदलकर रख दी। इस घटना के बाद ''आतंक के खिलाफ युद्व'' अभियान के पश्चात् भी कट्टरपंथी इस्लामिक संगठन युवा और नई पीढ़ी के आतंकवादीयों लिये एक आधार बनाकर तैयार कर रहे हैं।[8]

श्रीलंका में हुयी वर्ष 2007 से अप्रैल 2019 तक हिंसा में मारे गये लोगों का वर्षवार आंकड़ा

वर्ष	आतंकवादी/उग्रवादी घटनायें	नागरिक	सुरक्षा बल	आतंकवादी/विद्रोही/उग्रवादी	अज्ञात	योग
2007	1230	406	527	3221	131	4285
2008	2666	317	1444	9165	132	11058
2009	531	10258	1297	3370	594	15519
2010	0	0	0	0	0	0
2011	0	0	0	0	0	0
2012	0	0	0	0	0	0
2013	0	0	0	0	0	0
2014	1	0	1	3	0	4
2015	0	0	0	0	0	0
2016	0	0	0	0	0	0
2017	0	0	0	0	0	0
2018	0	0	0	0	0	0
2019	9	262	3	12	0	277
योग	**4437**	**11243**	**3272**	**15771**	**857**	**31143**

Table Saurce- https://www.satp.org/datasheet-terrorist-attack/fatalities/srilanka

श्रीलंका की सेना के पूर्व कमांडर फील्ड मार्शल सरथ फोसेंका ने राष्ट्र की सुरक्षा हालात पर संसदीय बहस के दौरान आई.एस.आई.एस., नेशनल–तोहीद–जमात और एल.टी.टी.ई. की परस्पर तुलना पर टिप्पणी की। उन्होने न कुछ सच्चाईयों को खोला बल्कि विपक्ष से भी आग्रह किया कि वो आतंकवाद के इस नये प्रकार पर सरकार का सहयोग करे। उन्होने रक्षा प्रतिष्ठानों की कमियों पर चेताया और उन पर ध्यान देने के लिये कहा। श्रीलंका एल.टी.टी.ई. को समाप्त कर चुका है उसी प्रकार नेशनल–तोहीद–जमात को उखाड़ फैंकना होगा। आई.एस. का एजेंडा दूसरे संगठनों तरह नहीं है वह बहुत बड़े पैमाने पर फैला हुआ है। आई.एस. पूरी दुनिया में सेकुलर शासन के विरूद्ध मुस्लिम ध्रुवीकरण कर रहा है। वह पूरे विश्व में मुस्लिम आबादी के बीच स्वयं को सामरिक, राजनीतिक,धार्मिक सत्ता में स्थापित करना चाहता है। फिलहाल नेशनल–तोहीद–जमात और आई.एस.आई.एस. में ऐसी क्षमता नहीं है कि वह किसी भी राष्ट्र पर कब्जा कर सके। ये संगठन केवल आतंकी हमले करके ऐजेंडे पर बढ़ना चाहते हैं। आई.एस. का अंत इतना आसान नहीं है लेकिन नेशनल–तोहीद–जमात उखाड़ कर फैंका जा सकता है। सुन्त–जु ने अपनी पुस्तक 'द आर्ट ऑफ वार' में लिखा है कि–''यदि कोई स्वयं को और अपने शत्रु को जानता है तो उसे सैकड़ों लड़ाईयों से डरने की जरूरत नहीं है। और यदि कोई अपने शत्रु को नहीं जानता है तो उसकी हर जीत में हार का दर्द होगा।'' एक राष्ट्र के रूप में श्रीलंका को अपनी सुरक्षा के साथ समझौता नहीं करना चाहिये। श्रीलंका ने राज्य के खुफिया तंत्र को कमजोर करने की कीमत चुकाई है।[9]

इस हमले के बाद से दक्षिण एशिया सहित समूची दुनिया में सामरिक समीकरण बदल सकते हैं। अविश्वास, आशंका और असुरक्षा का भाव और बढ़ सकता है। चूंकि श्रीलंका भारत का निकट पड़ोसी देश है तो उसके लिए इस घटना के और भी गहरे निहितार्थ हैं। दक्षिण एशिया में अपनी भौगोलिक एवं भू–राजनीतिक स्थिति के कारण भी भारत इससे जुड़े खतरों की अनदेखी नहीं कर सकता। आतंकीयोंने उन होटलों को निशाना बनाया जहां मुख्य रूप से अमेरीका, यूरोपीय व अन्य अंतर्राष्ट्रीय सैलानी ही ठहरते हैं। जिनमें अमेरिका और यूरोपीय देशों के नागरिकों की अच्छी खासी तादाद होती है। नेशनल तौहीद जमात का ताल्लुक मालदीव, बांग्लादेश और पाकिस्तानी संगठनों से है, वहीं कुछ बड़े आतंकी समूहों से भी उसके तार जुड़े हैं। नेशनल तौहीद जमात को कई ताकतवर सरकारी और गैर–सरकारी माध्यमों से सैन्य, प्रशिक्षण और वित्तीय मदद मुहैया होती है जिसमें उनके हित भी जुड़े होते हैं। श्रीलंका में भीषण आतंकी हमलों के बाद उपजा आक्रोश आतंकियों द्वारा शुरू की गई लंबी लड़ाई का एक अलग अध्याय है जिसमें उन्होंने धार्मिक उन्माद फैलाने के लिए नरसंहार को अपना जरिया बनाया। N.T.J. को विदेशों से फंडिंग मिलने का अनुमान है तथा धर्म के नाम पर दिया जाने वाला चंदा भी रक्त बहाने के काम आ रहा है। श्रीलंका सरकार के प्रवक्ता ने भी इसकी पुष्टि की है। अगर ऐसा है तो यह और भी बड़ी चिंता की बात है, क्योंकि इस N.T.J. का एक धड़ा तमिलनाडु में भी सक्रिय बताया जा रहा है। ऐसे में भारत को और भी अधिक सतर्क रहने की जरूरत है। चर्चों के ध्वंसावशेष और मृतकों एवं घायलों की भयावह तस्वीर में इसके संकेत स्पष्ट रूप से झलकते हैं।[10] इन कड़ियों को जोड़ने की कवायद में हमें कैलेंडर को कुछ पीछे भी पलटना होगा। कुछ दिन पहले न्यूजीलैंड के क्राइस्टचर्च में जुमे की नमाज के दौरान एक बंदूकधारी ने हमला किया था जिसमें पचास से अधिक मुसलमान मारे गए थे। उसके बाद जिस तरह यह हमला किया गया उसे एक तरह से क्राइस्टचर्च का जवाब ही माना जा रहा है। वैश्विक स्तर पर चल रही धार्मिक–वैचारिक खींचतान भी इसकी एक वजह हो सकती है। पूरी दुनिया में इस्लाम को लेकर बन रही धारणा से अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर तनाव बढ़ा है। अमेरिका में डोनाल्ड ट्रंप के राष्ट्रपति बनने के बाद इस्लाम के नाम पर द्वंद्व और बढ़ा है। उधर सीरियाई संकट के बाद यूरोपीय देशों पर बढ़े शरणार्थियों के बोझ ने भी कई देशों में सामाजिक ताना–बाना बिगाड़ने का काम किया है। इसे लेकर कई यूरोपीय देशों में आक्रोश है। संभव है कि अपने खिलाफ मुखर हो रही ऐसी आवाजों को जवाब देने की अभिव्यक्ति के रूप में यह हमला किया गया हो। अगर ऐसा है तब भी यह एक और गुत्थी उलझ जाती है कि आतंकियों ने अपने मंसूबों को अंजाम देने के लिए श्रीलंका का ही चुनाव क्यों किया? इसके लिए श्रीलंका की आंतरिक स्थिति पर गौर भी करना होगा। इसमें कोई संदेह नहीं कि भारत की ही तरह श्रीलंकाई समाज में भी कई विभाजक रेखाएं हैं। यह द्वीपीय देश कई धार्मिक और सामजिक पहचानों पर विभाजित है। श्रीलंका से बहुसंख्यक बौद्धों की दबंगई की खबरें रह–रहकर आती रहती हैं। उनके दूसरे लोगों के साथ संघर्ष होते रहे हैं, लेकिन धार्मिक आधार पर ऐसा भीषण रक्तपात नहीं हुआ जैसा देखने को मिला। यहां मुस्लिम आबादी बहुत ज्यादा नहीं है, लेकिन फिर भी कुल आबादी में उनकी संख्या दस प्रतिशत है। हिंदुओं (तमिलों) की करीब 12 फीसदी और ईसाइयों की लगभग सात फीसदी शेष सिंहल हैं जो बौद्ध मत के अनुयायी हैं। इन हमलों को जिस तरह अंजाम दिया गया उनसे साफ है कि आतंकियों को स्थानीय मदद जरूर मिली होगी। जिन लोगों के नाम सामने आ रहे हैं उनसे भी यह स्पष्ट है कि हमलों में स्थानीय लोगों की मिलीभगत रही। राजनीतिक अस्थिरता के दौर से गुजर रहे श्रीलंका से बीते कुछ समय में मिले संकेत शुभ नहीं कहे जा सकते। बीते दिसंबर में यहां हिंसक वारदातें हुई थीं।

जहां तक इस्लामिक पहचान के आधार पर संघर्ष की बात है तो हाल में थाईलैंड और म्यांमार में भी ऐसा देखने को

मिला। म्यांमार में तो मुसलमानों को खदेड़ने से पड़ौसी देशों में शरणार्थियों की एक नई समस्या पैदा हो गई। श्रीलंका के भयावह घटनाक्रम ने नए संघर्षों की एक जमीन तैयार की है, जो दक्षिण एशिया और दक्षिण पूर्व एशिया के लिए खतरे की घंटी से कम नहीं हैं। इस इलाके से भारत के रिश्ते न केवल अहम हैं, बल्कि उनसे पुराना सांस्कृतिक जुड़ाव भी है। इस रूह कंपा देने वाले आतंकी हमले के तार विदेशों से भी जुड़ते दिख रहे हैं। श्रीलंका सरकार ने हमलों की साजिश का तानाबाना विदेश में बुने जाने की बात कही है। इससे आतंक को पालने–पोसने वाले देशों पर दबाव बढ़ना स्वाभाविक है। आतंक के मामले में पाकिस्तान की संदिग्ध भूमिका से पूरी दुनिया परिचित है। श्रीलंका में कुछ लोगों को यह आशंका सताती रही है कि पाकिस्तानी तत्व स्थानीय मुसलमानों को भड़काते हैं। पाकिस्तान तत्वों से आशय डीप स्टेट यानी फौज और आइ.एस.आइ. की जुगलबंदी से है। जाहिर है कि इस जघन्य हमले के बाद पाकिस्तान पर पहरेदारी और कड़ी होगी। हालांकि पुलवामा हमले के बाद भारत ने पाकिस्तान पर शिकंजा कसा है जिसे पर्याप्तअंतर्राष्ट्रीय सहयोग और समर्थन भी मिला है। इसमें कई देशों ने न केवल भारत का समर्थन किया, बल्कि पाकिस्तान को सुरक्षा परिषद् में घेरने का व्यूह भी रचा। अगर श्रीलंका की घटना से आतंकियों के पस्त पड़े हौसले को बल मिलता है तो ये सभी प्रयास व्यर्थ हो जाएंगे और इस क्षेत्र में शांति एवं स्थिरता को बड़ा झटका लग सकता है। संकट की इस घड़ी में अंतर्राष्ट्रीय बिरादरी श्रीलंका के साथ खड़ी है। भारत सरकार ने भी अपने पड़ोसी देश को हरसंभव मदद का आश्वासन दिया है। खुद दशकों से आतंक का दंश झेल रहा भारत अपने मित्र देश की पीड़ा को बखूबी समझ सकता है।[11] सामाजिक और आर्थिक रूप से विकसित न्यूजीलैंड तो इस आतंकी हमले से जल्द उबर सकता है, लेकिन श्रीलंका जैसे विकासशील और राजनीतिक रूप से अस्थिर देश के लिए इतने बड़े हमले का सही तरह सामना करना मुश्किल है। वो इसलिए कि, वह सामाजिक बिखराव से मुक्त नहीं हो पाया है। लिट्टे के खात्मे के बाद अशांति और अस्थिरता के दौर से निकलने की कोशिश में लगे श्रीलंका के लिए यह हमला एक बड़ी मुसीबत बनकर आया है। एक तो सामाजिक अशांति का खतरा है और दूसरे, पर्यटन उद्योग की कमर टूटने का। आतंकी हमले के बाद श्रीलंका के वे होटल खाली से हो गए हैं जहां अच्छी–खासी संख्या में विदेशी पर्यटक रुकते थे। श्रीलंका आतंकी हमले से बच सकता था, अगर उसने भारत की ओर से भेजी गई खुफिया सूचना पर सतर्कता बरती होती।यह पर्याप्त नहीं कि श्रीलंका के राष्ट्रपति ने एन.टी.जे. और एक अन्य चरमपंथी संगठन पर पाबंदी लगा दी, क्योंकि श्रीलंका नहीं चाहता कि कोई भी सुरक्षात्मक चूक दुबारा हो। यह बात और स्पष्ट हो जानी चाहिए कि जब सरकारें समय पर सही निर्णय नहीं लेतीं तो उसकी भारी कीमत चुकानी पड़ती है। आज कोई भी देश आतंकवाद संबंधी खुफिया सूचनाओं की अनदेखी करने की स्थिति में नहीं है, लेकिन यह पहली बार नहीं जब कहीं पर आतंकी हमले संबंधी खुफिया जानकारी की अनदेखी की गई हो या फिर पर्याप्त चौकसी न बरती गई हो। अभी कुछ दिनों पहले पुलवामा में हुआ आतंकी हमला खुफिया और सुरक्षा एजेंसियों की चूक का ही नतीजा माना जा रहा है। इससे संतुष्ट हुआ जा सकता है कि भारतीय खुफिया एजेंसियों को श्रीलंका में आतंकी हमले की भनक लग गई, लेकिन इसकी जरूरत बनी हुई है कि भारतीय सुरक्षा एवं खुफिया एजेंसियां अतिरिक्त चौकसी बरतें। इस जरूरत की पूर्ति तो सभी देशों को करनी होगी कि आतंकवाद से निपटने में कोई कोताही न बरती जाए। श्रीलंका में हुए आतंकी हमले के बाद पूरी दुनिया का ध्यान एक बार फिर इस्लामिक स्टेट की ओर जाना स्वाभाविक है, लेकिन इस हमले ने पश्चिमी देशों के इस दावे की पोल खोल दी कि पश्चिम एशिया से आइ.एस. का खात्मा हो गया है। हालांकि सीरिया में आइ.एस. के आतंक को नियंत्रित करने में पश्चिमी देशों को कामयाबी मिली है, लेकिन उसके आधार पर यह नहीं माना जा सकता कि आइ.एस. पूरी तरह खत्म हो गया है। सच तो यह है कि न तो सीरिया जिहादी आतंकवाद से मुक्त हो सका है और न ही अफगानिस्तान तालिबान, अलकायदा और आइ.एस. के आतंक से। दुनिया के अन्य देश जिन जिहादी संगठनों से ग्रस्त हैं उनमें आइएस प्रमुख है। आइ.एस. एक आतंकी संगठन से अधिक मानसिकता है और उसे खत्म करना आसान नहीं। इस मानसिकता ने दुनिया के अलग–अलग देशों के मुस्लिम समाज के एक वर्ग को अपने प्रभाव में ले लिया है, जिनमें पढ़े–लिखे लोग भी शामिल हैं। जब तक कट्टरता की यह मानसिकता पूरी तरह समाप्त नहीं की जाती तब तक आइ.एस. जैसे संगठनों को खत्म करना संभव नहीं। कट्टरता के इसी प्रसार के कारण मुस्लिम समाज पर सवाल उठने लगे हैं। तमाम मुस्लिम बुद्धिजीवी इसे समझ रहे हैं, फिर भी उनकी आवाज आइ.एस. जैसे संगठनों के आगे दब रही है। स्पष्ट है कि चरमपंथी और आतंकी संगठनों के खिलाफ और ऊंचे स्वर में एकजुट होकर आवाज बुलंद करने की आवश्यकता है। आखिर आइ.एस. जैसे आतंकी संगठनों को आतंक फैलाने के लिए धन कहां से मिल रहा है? क्या कारण है कि पढ़े–लिखे मुस्लिम युवा भी इस आतंकी संगठन में शामिल होने को तैयार हैं? इन सवालों के जवाब खोजने ही होंगे। आज पूरा मुस्लिम जगत आतंक के ठप्पे से आहत है, लेकिन आम मुसलमान पाकिस्तान जैसे आतंकी संगठनों को पालने–पोसने और उनकी खुली पैरवी करने वाले देशों के समक्ष असहाय है। उनका उन धार्मिक–राजनीतिक नेताओं पर भी कोई बस नहीं जो अपने सियासी लाभ के लिए मजहबी कट्टरता को हवा देते हैं। भारत में भी अक्सर मुस्लिम तुष्टीकरण का खेल खेला जाता है, इस राजनीति के कारण ही मजहबी कट्टरता के खिलाफ उपयुक्त माहौल बनाना मुश्किल होता है। देखना यह होगा कि श्रीलंका में

नेशनल–तौहीद–जमात की अनदेखी क्यों हुई? श्रीलंका में हुए आतंकी हमले ने दक्षिण एशिया में आतंक के खतरे को गहराने का काम किया है। एक ऐसे समय जब कश्मीर में पाकिस्तान की हरकतें पहले से ही भारत की चिंता का कारण हैं तब श्रीलंका में नेशनल–तौहीद–जमात की कारगुजारी इस चिंता को और बढ़ाने वाली है।

भारत के लिए यह अच्छा संदेश नहीं कि बांग्लादेश के बाद उसके एक और पड़ोसी देश में आइ.एस. ने शांति भंग कर दी। श्रीलंका में हमले के बाद भारत की सुरक्षा एजेंसियां अवश्य ही सतर्क हुई होंगी। उन्हें होना भी चाहिए, क्योंकि नेशनल–तौहीद–जमात की जड़ें तमिलनाडु में भी होने का अंदेशा है। अंदेशा यह भी है कि इस संगठन का सरगना तमिलनाडु आता–जाता रहा है और उसे दक्षिण भारत से आर्थिक मदद भी मिलती रही है।[12]भारत जहां जम्मू–कश्मीर में आतंक की चुनौती का तोड़ निकालने की जद्दोजहद में जुटा है वहीं पश्चिम बंगाल, केरल और तमिलनाडु जैसे राज्यों में धीरे–धीरे जिहादी शैतान सिर उठा रहे हैं। भारत लगातार बढ़ते इस खतरे की अनदेखी नहीं कर सकता है, क्योंकि आइ. एस. ने कथित रूप से बंगाल के लिए अपने नए 'अमीर' की घोषणा कर दी है और श्रीलंका में हुए बम धमाकों ने तमिलनाडु और केरल में जेहादी ताकतों की बढ़ती भूमिका और उन्हें विदेशों से मिलने वाली मदद ने भारत सहित अन्य एशियाई देशों की नींद उड़ादी है। सऊदी वित्तीय मदद से चल रहा तौहीद–जमात कट्टर वहाबी विचारधारा को मानने वाला संगठन है। मुस्लिम समुदायों का लगातार अरबीकरण हो रहा है और इसका प्रभाव दक्षिण एशिया के बांग्लादेश, श्रीलंका के पूर्वी प्रांतों और भारत के पश्चिम बंगाल से लेकर केरल, तमिलनाडु सहित पूरे विश्व में देखा जा सकता है। सीरिया और इराक में आइ.एस. के प्रभाव के बाद आतंकवाद की चुनौती और कठिन हो गई है। आतंकी हमलों का प्रशिक्षण पाने वाले आइ.एस. के ये आतंकवादी जो कि बड़े हमले करने में पारगंत हैं सीरिया और इराक से अपने घरों को लौट रहे हैं। इससे दक्षिण और दक्षिण पूर्व एशिया में एक बड़ा खतरा उत्पन्न हो गया है। श्रीलंका में हुये धमाकों से यह पता चलता है कि हैं कि अज्ञात स्थानीय समूह कितनी भारी तबाही मचा सकते हैं। श्रीलंका आतंकी हमला वास्तव में इस बड़े खतरे को रेखांकित करता है कि सीरिया और इराक से लौटे आइएस के आंतकी कुछ वैसी ही रणनीति अपना सकते हैं जैसी अफगान युद्ध खत्म होने के बाद ओसामा बिन लादेन और उसके संगठन अल–कायदा ने अपनाई थी। अल–कायदा जैसे संगठनों ने एशिया, पश्चिम एशिया और पश्चिमी देशों को अपने धमाकों से दहला दिया था। आतंक का खतरा केवल सीरिया और इराक से लौटे आतंकवादी ही नहीं स्थानीय लोग भी बड़े खतरे के रूप में उभरे हैं जो अपने–अपने देश में रहकर ही हिंसा को मजहब का एक हिस्सा मानने लगे हैं जिसे जिहाद का नाम दिया जाता है।

आतंक का महिमामंडन करने वाली ऐसी ताकतें दिनों–दिन मजूबत होती जा रही हैं। मौजूदा आम चुनावों में द्रमुक और कुछ अन्य स्थानीय दलों ने खुलेआम उस तौहीद–जमात की पैरवी की है जिसने श्रीलंका में उसको को जड़ें जमाने में मदद की।बांग्लादेश ने 2016 में ढाका के एक रेस्तरां में धमाकों के लिए पाकिस्तान की कुख्यात एजेंसी आई. एस.आई. को जिम्मेदार बताते हुए कहा था कि हमले के लिए उसने कैसे एक बांग्लादेशी संगठन को अपना मोहरा बनाया और उसे हथियारों सहित तमाम वित्तीय साधन उपलब्ध कराये थे। यही काम श्रीलंकाई एनटीजे ने आई.एस.आई. और आइ. एस. के पिट्ठू लश्करे–ए–तैयबा के साथ मिलकर किया। आई. एस.आई. और लश्कर ने श्रीलंका में अपने संयुक्त परिचालन के साथ ही भारत में भी तौहीद–जमात के कार्यकर्ताओं को भी साथ जोड़ लिया है। श्रीलंका में आत्मघाती हमले में मारा गया एन.टी.जे का मुखिया जहारन हाशिम भगोड़े और विवादास्पद इस्लामिक उपदेशक जाकिर नाइक के जहरीले धार्मिक भाषणों से प्रेरित था। हाशिम को दक्षिण भारत से वित्तीय मदद मिलने का दावा श्रीलंकाई सरकार ने किया। बम धमाकों को लेकर श्रीलंका को खुफिया जानकारी देने के बावजूद अपनी सरहदों के भीतर जिहादी ताकतों के खिलाफ रणनीति बनाने मे भारत का रवैया बहुत सुस्त रहा है। भारत ने ढाका हमले के बाद ही जाकिर नाइक पर तब प्रतिबंध लगाया जब बांग्लादेश ने उस पर कार्रवाई की मांग की। आज नाइक मलेशिया में पनाह लिए हुए है, फिर भी भारत ने मलेशिया के साथ कोई कड़ाई नहीं की है और न ही जाकिर को भारत लाने के लिये को सख्ती दिखायी। एक समय जैसे अल–कायदा के समक्ष अपना अस्तित्व और प्रासंगिकता बनाए रखने की चुनौती उत्पन्न हो गई थी कुछ वैसे ही संकट से इस समय आइ.एस. गुजर रहा है। यही वजह है कि वह उन इलाकों में भी आतंकी घटनाओं की जिम्मेदारी ले रहा है जहां उसकी खास मौजूदगी नहीं। श्रीलंका हमले में सीधे आइ.एस. का हाथ होने के बजाय संभव है कि आइ.एस. की कट्टर वहाबी विचारधारा से प्रभावित लोगों ने हमले को अंजाम दिया हो। आत्मघाती हमलावर हफ्तों नहीं, बल्कि महीनों में तैयार होता है। ऐसे में यह अटकल तार्किक नहीं लगती कि श्रीलंका हमला क्राइस्टचर्च हमले का बदला लेने के लिए किया गया। श्रीलंका के एक मंत्री ने पहले यही बयान दिया था, लेकिन बाद में श्रीलंकाई प्रधानमंत्री ने उसे खारिज कर दिया। प्रचार आतंक की प्राणवायु है, क्योंकि इसके माध्यम से वे खौफ जताने और ताकत दिखाने का काम करते हैं। हिंसक एवं असहिष्णु धारा को सऊदी अरब सहित कई देश वित्त पोषित कर रहे हैं। वहाबी कट्टरता जहां आतंकवाद की वैचारिक धुरी है वहीं आइ.एस., अल–कायदा, तालिबान, लश्कर–ए–तैयबा और बोको–हराम उस आतंक को अमली जामा पहनाने वाली कड़ियां हैं। श्रीलंका की ही तरह तमिलनाडु, केरल और पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों में जिहादी खतरे की कड़ी वहाबी विचारधारा के प्रसार के साथ जुड़ी है।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

अगर इस जेहादी खतरे से निपटा नहीं गया तो यह भारत में आंतरिक सुरक्षा के समक्ष एक बड़ा संकट पैदा कर सकता है। चूंकि आतंक विरोधी अभियान में भारत का ध्यान मुख्य रूप से जम्मू–कश्मीर में ही केंद्रित है इसलिए जिहादियों को केरल, तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों में प्रभाव बढ़ाने की गुंजाइश मिल जाती है। भारत को इस सिर उठाते खतरे के प्रति चौकन्ना रहना होगा। उसे हिंसा और नफरत फैलाने वालों पर शिकंजा कसना होगा। इसके साथ ही सऊदी और खाड़ी के अन्य देशों से आने वाले धन पर भी निगरानी रखनी होगी ताकि उस स्त्रोत पर शिकंजा कसा जा सके जिससे आतंकवाद फलता–फूलता है।[13]

श्रीलंका में हुआ आतंकवादी हमला कोई पहला ऐसा हमला नहीं है। इससे पहले भी दक्षिण एशियाई राष्ट्रों पर इस तरह के कायराना हमलों की साजिशें होती रही हैं। जिनमें कुछ प्रमुख घटनायें हैं– 12 अक्टूबर 2002 को इंडोनेशिया के बाली में भयानक हमले में 202 लोगों की मृत्यु तत्काल हो गयी और 250 से ज्यादा लोग गंभीर रूप से घायल हुये। 11 जुलाई 2006 को मुंबई की लाइफ लाइन कही जाने वाली लोकल ट्रेनों में सिलसिलेवार सात धमाके हुये जिसमें सात लोग मारे गये और 700 से ज्यादा लोग घायल हुये। अभी तक भारत मुंबई लोकल ट्रेन हमलों से निकल भी नहीं पाया था कि 26 नवम्बर 2008 को लश्कर के 10 आंतकवादियों ने मुंबई शहर के शिवाजी टर्मिनल, ताज होटल, रेलवे स्टेशन आदि स्थानों को निशाना बनाया जिसमें 166 लोग मारे गये। आतंकवादीयों को मारने और पकड़ने के लिये एन.एस.जी. को चार दिन तक आपरेशन चलाना पड़ा। इतना ही नहीं आतंक की फैक्ट्री कहा जाने वाला पाकिस्तान भी इससे अछूता नहीं रहा। 17 दिसबंर में 2014 को पेशावर में सेना का स्कूल आतंकवादीयों के निशाने पर आ गया। इस हमले में 141 लोग मारे गये जिनमें से 132 सिर्फ स्कूली बच्चे थे। इस हमले जिम्मेदारी आतंकवादी संगठन तहरीक–ए–तालिबान ने ली थी।[14]

निष्कर्षः–

श्रीलंका की सरकार और वहां की एजेंसीयां घरेलू कट्टरपंथी गुट नेशनल–तौहिद–जमात के साथ ही विदेशी गुट पर पहले ही संदेह जता रही थी और आई.एस. प्रोपेगंडा 'अमाक' द्वारा जारी विडीओ द्वारा इस बात को और बल मिला। इस हमले में मारे गये आतंकीयों के बारे मिली जानकारी चौंकाती है क्योंकि इनमें सम्पन्न पारिवारिक पृष्ठभूमि के पढ़े लिखे लड़के शामिल थे। यहां तक कि श्रीलंका के एक प्रतिष्ठित मसाला व्यापारी के दो बेटे भी इस हमले में शामिल थे। इससे ज्ञात होता है कि किस तरह से कटट्रपंथी गुटों ने अपनी पैठ बना ली थी। हमले के बाद शुरूआत में ये शक हुआ कि वह न्यूजीलैंड के मस्जिदों में हुये हमले का जबाव था। विशेषज्ञों के अनुसार न्यूजीलैंड में हमला 15 मार्च को हुआ था और श्रीलंका के हमले की भयावता देखकर लगता है कि इसे कई महीनों की तैयारी के बाद अंजाम दिया गया। वास्तविकता में पाकिस्तान, बांग्लादेश, भारत के साथ ही मालद्वीव और श्रीलंका से अनेक युवा इस्लामिक स्टेट से प्रभावित होकर सीरिया और इराक चले गये थे, लेकिन सीरिया में आई.एस. कमजोर पड़ने लगा और ये लड़ाके अपने देशों को वापस लौटने लगे हैं। यह हमला इस बात को पुख्ता करता है कि इस्लामिक स्टेट दक्षिण एशिया में अपनी जड़े जमाने में लगा हुआ है, इससे निपटने के लिये बेहतर तालमेल और सहयोग की जरूरत है। स्वभाविक रूप से इसमें भारत की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. in.one.un.org/world-has-to-find-new-ways-to-fight-terror-radicalization
2. कुमार रत्तू कृष्ण, दक्षिण एशिया आतंक साया और सार्क घोषणाएँ, बुक एनक्लेव प्रकाशन जयपुर (2005) पृ.स. 88
3. navbharattimes.indiatimes.com/opinion/editorial/sri-lanka-serial-blasts-2019
4. अमर उजाला (देहरादूनसंस्करण) दिनांक 24/04/2019, पृ.स. 13
5. https://srilankamirror.com
6. https://srilankamirror.com
7. राष्ट्रीय सहारा (देहरादूनसंस्करण) दिनांक 23/04/2019,पृ.स. 08
8. वर्ल्ड फोकस जर्नल (हिंदी) मई 2016 पृ.स. 12
9. www.livehindustan.com/blog/videshiakbhar/story-videshi-media-hindustan
10. दैनिक जागरणसंपादकीय(देहरादूनसंस्करण) दिनांक 24/04/2019,पृ.स. 08
11. दैनिक जागरणसंपादकीय(देहरादूनसंस्करण) दिनांक 23/04/2019,पृ.स. 10
12. दैनिक जागरणसंपादकीय(देहरादूनसंस्करण) दिनांक 28/04/2019,पृ.स. 12
13. दैनिक जागरणसंपादकीय(राष्ट्रीय संस्करण) दिनांक 04/05/2019,पृ.स. 08
14. दैनिक हिन्दुस्तान(देहरादून संस्करण) दिनांक 22/04/2019,पृ.स. 13

RRIJM 2015, All Rights Reserved